Volume-1, Issue-01, Aug 2014 ISSN: 2349-7637 (Online)

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

Research Paper

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी

राम चरण मीना

सहायक प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
मोतीलाल नेहरु महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110021

यह तथ्य है कि 14 सितम्बर 1950 को संविधान निर्माताओं द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। लेकिन इस तथ्य से भी मुँह नहीं मोड़ा जा सकता है कि हिंदी भाषा का प्रभाव और महत्त्व हमारे राष्ट्रीय आंदोलन की शुरू से ही परिलक्षित होता है। उत्तर भारत में जहाँ यह जन–जन की संपर्क भाषा के रूप में लोकप्रिय हुई, वहीं दक्षिण भारत में सी. राजगोपालाचारी एवं अन्य हिंदी विद्वानों ने इसे दक्षिण भारत हिंदी समिति के कार्य–कलापों द्वारा वहाँ के लोगों तक पहुँचाया और उसे राष्ट्रीय (स्वाधीनता) आंदोलन की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रशंसनीय प्रयास किया। तद्युगीन कवियों, लेखकों, पत्रकारों, नाटककारों यहाँ तक कि सिनेमा ने भी हिंदी का भरपूर प्रयोग किया और स्वाधीनता आंदोलन को मजबूत बनाया।

स्वाधीनता आंदोलन में गांधी के आगमन के साथ हिंदी का प्रचार–प्रसार धीरे–धीरे लेकिन मजबूती से बढ़ने लगा। महात्मा गांधी अपनी सभाओं में अधिकांशतः हिंदी का ही प्रयोग करते थे। उनकी कोशिशों के कारण ही स्वाधीनता की लड़ाई की भाषा हिंदी बनी। महात्मा गांधी ने स्वाधीनता आंदोलन को गति देने वाले जितने भी आंदोलन किए वे हिंदी में ही जाने गए। इसलिए 'सत्याग्रह', 'असहयोग', 'सविनय अवज्ञा' और 'भारत छोड़ो' आन्दोलन जनता के बीच तादात्म्य बिठाने में पूरी तरह सफल रहा। इसके साथ ही, स्वाधीनता आंदोलन के जननायकों के भाषणों पर भी यदि हम नज़र डालें तो पायेंगे कि चाहे उनकी मातृभाषा हिंदी नहीं रही इसके बावजूद वे जनमानस तक हिंदी के माध्यम से ही अपनी बात सरलता से पहुंचाते थे।

प्रसिद्ध भाषा–चिंतक प्रो. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने भी माना है कि भाषा राष्ट्रीय एकीकरण का महत्त्वपूर्ण उपादान है। हिंदी के विभिन्न पहलुओं द्वारा स्वाधीनता आंदोलन को अपनी भूमिका को अपरिहार्य किया। भारत के नवजागरण में हिंदी का महत्ती योगदान है, हिंदी साहित्य ने स्वाधीनता संग्राम को भावनात्मक गति दी। स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका अप्रतिम है। स्वाधीनता संघर्ष में हिंदी फिल्मों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

हिन्दी पत्रकारिता और स्वाधीनता आंदोलन

स्वाधीनता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की अहम भूमिका थी। स्वाधीनता आंदोलन को दशा और दिशा देने का महत्ती काम मुख्यतः पत्रकारिता ने ही किया। आज की तरह तब पत्रकारिता व्यवसाय नहीं, वृत्ति थी। इसलिए हर तरह की कीमत चुकाकर पत्रकारों ने आजादी की लड़ाई जारी रखी। सही मायनों में इस देश में आजादी की लड़ाई का पहला ऐलान पत्रकारिता ने ही किया। 8 फरवरी, 1857 को दिल्ली में अजीमुल्ला खां ने हिंदी और उर्दू में एक छोटा समाचार–पत्र निकाला – 'पयामे आज़ादी'। उसमें उस समय के राष्ट्रगीत की प्रथम पंक्तियाँ छपी थी –

"हम हैं इसके मालिक, हिंदुस्तान हमारा

पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।"[1]

'पयामे आज़ादी' की सारी प्रतियां जब्त कर जलायी गयी। 'पयामे आज़ादी' के बाद लगभग एक दशक तक पत्रकारिता में सन्नाटा रहा और फिर एक दौर शुरू हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र के 'कविवचन सुधा' से! इसी हिंदी पत्रकारिता ने आधुनिक काल को स्वदेशी आंदोलन का पर्याय बनाया। सही मायने में स्वदेशी आंदोलन शुरू करने का श्रेय 'कविवचन सुधा' को ही जाना चाहिए।

स्वाधीनता आंदोलन के समय पत्रकारिता जनहिताय थी। युगल किशोर शुक्ल का 'उदन्त मार्तंड', 'नीलरतन' हलदार का 'बंगदूत', शिवप्रसाद सितारे हिंद का 'बनारस अखबार' ने देश को प्रधानता दी और अंग्रेजों से सीधा लोहा लिया। पहला दैनिक समाचार–पत्र 'सुधावर्षण' ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने का बहादुरशाह जफर का फरमान छापकर विदेशी सत्ता को खुली चुनौती दी थी।

सन् 1900 ई. से 1920 ई. तक बाल गंगाधर तिलक और 1920 के बाद महात्मा गांधी ने हिंदी पत्रकारिता को मशाल के तौर पर इस्तेमाल कर स्वाधीनता लड़ाई के रास्ते को रोशन किया। 'युगांतर', 'गदर', 'वंदेमातरम', 'संध्या', 'स्वराज्य', 'कर्मयोगी', 'प्रताप', 'वीर अर्जुन', 'तेज', 'मिलाप', 'कर्मवीर', 'भारत मित्र' आदि समाचार–पत्र नहीं, स्वाधीनता आंदोलन के हथियार थे।

स्वाधीनता की इस लड़ाई में हिंदी के साथ उर्दू के 'मालवा अखबार', 'जमाना', 'आज़ाद', 'स्वराज्य', 'पेशवा', 'हिन्दुस्तान', 'आकाश', 'गदर', 'सुबह–ए–वतन' जैसी दर्जनों उर्दू पत्रिकाएं अंग्रेजों के खिलाफ लिख रही थीं। स्वाधीनता आंदोलन में भले हिंदी उर्दू भाषा विवाद ने अंग्रेजों को 'फूट डालो' नीति को सफल किया हो लेकिन पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी–उर्दू साथ–साथ अंग्रेजों की आलोचना कर रहे थे।

उल्लेखनीय बात यह है स्वाधीनता–आंदोलन के समय की हिंदी पत्रकारिता में गरीब मजदूर, किसान, मेहनतकश भारत की सुंदरतम तस्वीर में मुख्य थे। तिलक, गांधी, माखनलाल चतुर्वेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी से लेकर प्रेमचंद, निराला जैसे संपादक जानते थे कि देश की उन्नति का सही अर्थ मजदूर, किसान, मेहनतकश वर्ग की उन्नति से है। तभी 1908 ई. में राधामोहन गोकुल का 'देश का धन', महावीर प्रसाद द्विवेदी का 'संपत्तिशास्त्र' जैसे लेख; 1918 ई. में, सरस्वती पत्रिका में गंगाधर पंत का लेख 'अवध के जमींदार और काश्तकार', 1907 ई. में सरस्वती पत्रिका में ही माधव राव सप्रे का लेख 'हड़ताल' देश के किसानों की चिंता को दर्शाता है और जमींदारों की कड़ी आलोचना करता है।

1920 ई. के बाद हिंदी पत्रकारिता पर गांधी का सघन प्रभाव देखा जा सकता है। हिंदी पत्रकारिता ने सत्यवादी निर्भिकता को अपना मूलमंत्र बनाया। अब पत्र–पत्रिकाओं में उत्तेजक बयानबाजी, भड़काऊ भाषण के स्थान पर जनता के विचारों को समझकर व्यक्त किया जाने लगा। गांधी–युग से पूर्व हिंदी पत्रकारिता का मूल स्वर राजनैतिक कम और साहित्यिक अधिक था। लेकिन 1920 ई. के बाद हिंदी पत्रकारिता में नये जीवन–मूल्यों और आदर्शों की स्थापना हुई, जिसपर गांधी के विचार और तद्युगीन राजनैतिक परिस्थितियों का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

महात्मा गांधी और हिंदी

महात्मा गांधी की हिंदी का आशय हिन्दुस्तानी भाषा थी जो हिंदी–उर्दू मिश्रित भाषा थी। अपने दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान एक साक्षात्कार में कहा था, "यह भाषा उत्तर भारत के सभी लोग बोलते हैं। इसकी माता संस्कृत और फारसी होने के कारण वह हिंदू और मुसलमान दोनों को अनुकूल पड़ सकती है। इसके सिवा चूंकि फकीर और संन्यासी भी यही भाषा बोलते हैं। अतः इसका असर सभी जगह होना है। अनेक अंग्रेज भी सीखते हैं। इस भाषा का फैलाव बहुत है, यह भाषा अपने आप में बहुत मीठी, नम्र और ओजस्वी है। हर एक पाठशाला में स्वभाषा के अतिरिक्त इस भाषा का शिक्षण दिया जाना चाहिए।"[2]

दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर गांधीजी ने पाया कि 'हिंदी के विरोध में अंग्रेजी सरकार, कांग्रेस के अधिकांश नेता तथा अंग्रेजी राज चलाने वाली नौकरशाही खड़ी थी। गांधीजी ने इन तीनों से मोर्चा लिया। गांधीजी ने दक्षिण के चार प्रांतों आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक को हिंदी के अनुकूल बनाया। बाद में बाकी के प्रांत असम, बंगाल, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात और सिंध में हिंदी का प्रचार चलाकर यहां के लोगों को हिंदी के अनुकूल बनाया। उन्होंने अनेक प्रभावशाली नेताओं को हिंदी के पक्ष में लिया जो आसान काम नहीं था।'[3]

महात्मा गांधी का विचार था कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। यह राष्ट्रभाषा ही स्वराज्य प्राप्ति का सशक्त माध्यम है। 'मेरे विचार में स्वराज्य प्राप्ति की गति से तीव्रता लाने के लिए स्वदेशी हिन्दू–मुस्लिम एकता तथा राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्रचार आवश्यक है।'[4] हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए उन्होंने बार–बार हिंदीतर प्रदेश की जनता से इसे पढ़ने तथा बोलने का आग्रह ही नहीं किया बल्कि हर सभा एवं सम्मेलनों में इसके विकास के लिए प्रस्ताव भी पारित करवाये। गांधीजी के आह्वान पर बम्बई, कलकत्ता के समृद्ध मारवाड़ियों ने काफी धन राशि मद्रास प्रेसिडेंसी में हिंदी प्रचार के लिए भेंट की। गांधी जी इस बात को स्वीकार करते थे कि राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता की कड़ी है सांस्कृतिक, सामाजिक सार्वभौम जीवन मूल्यों की आध्यात्मिक शक्ति है।

भारत का नवजागरण और हिंदी

भारत का नवजागरण अलग–अलग भाषाओं में अलग–अलग कालखंड में हुआ। भारतीय नवजागरण की यह चेतना एक समान उद्देश्य लिए हुए थी। यह उद्देश्य समाज और धर्म सुधार था। रेल, तार, डाक का जाल बिछाना, प्रेस खोलना, अंग्रेजी शिक्षा की नींव डालना और फोर्ट विलियम कॉलेज बनवाना सब अंग्रेजों ने अपने हित के लिए किया, लेकिन इससे भारतीयों का जागरण हुआ।

उर्दू नवजागरण के तहत गालिब, सैय्यद अहमद, मीर और हाली अपने शेरो–शायरी से समाज में फैल रहे धार्मिक आडम्बर का विरोध कर रहे थे। 'बांग्ला नवजागरण' के तहत सामाजिक संगठन बनाकर ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा–विवाह

का कानून पास कराया। बाल–विवाह को रोकने की कोशिश की। 1849 ई. में कलकत्ता में स्त्री शिक्षा के लिए 'बेधुन स्कूल' की स्थापना की। 'मराठी नवजागरण' के केंद्र में दलित चेतना थी। 1867 ई. में आत्माराम पाण्डुरंग ने अन्य समाज सेवियों के सहयोग से 'प्रार्थना समाज' की स्थापना की। इस नवजागरण के विकास में आत्माराम पांडुरंग के साथ ज्योतिबा फुले, गोविंद रानाडे ने सहयोग दिया। केरल नवजागरण और तमिल नवजागरण के केंद्र में भी दलित चेतना थी। उड़िया नवजागरण के केंद्र में किसान और मजदूर वर्ग था। इसका नेतृत्व 'फकीर मोहन सेनापति द्वारा किया गया। जहां तक हिंदी भाषा–भाषी क्षेत्र में नवजागरण की शुरुआत की बात है तो इसमें सामाजिक–धार्मिक सुधार के साथ राजनैतिक चेतना भी अंतर्निहित थी। हिंदी नवजागरण का प्रतिफलन ही 1857 ई. की क्रांति के बाद होता है और इसको विकसित करने में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का योगदान महत्त्वपूर्ण है। उनके द्वारा सम्पादित 'कविवचन सुधा' (1868), हरिश्चंद्र मैगजिन (1873), बाला बोधिनी (1874 ई.) में धार्मिक सामाजिक कुप्रथाओं और स्त्रियों पर किए जा रहे शोषण से संदर्भित थी। यह हिंदी नवजागरण निज भाषा, निज संस्कृति की उन्नति और अंग्रेजों की नीतियों के विरुद्ध मुखर थी। हिंदी नवजागरण के कारण ही 'आर्य समाज' की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती ने बम्बई में की। आर्य समाज के प्रमुख उद्देश्यों में ईसाई धर्म के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना तथा हिन्दू धर्म में प्रचलित विविध रूढ़ियों, अंधविश्वासों के खिलाफ जनमानस को जागृत करना था। 'आर्य समाज' ही पहली ऐसी संस्था थी जिसने अखिल भारतीय स्तर पर स्वभाषा, स्वदेश, स्वधर्म तथा स्वराज्य के लिए आंदोलन की पहल की।

तद्युगीन समय के सामाजिक धार्मिक सुधार संगठनों ने नवजागरण की चेतना को पूरे देश में फैलाया। ध्यातव्य यह है कि हिंदी नवजागरण में स्त्री–दलित चेतना के साथ पराधीनता की चेतना का भी विकास दिखता है इसलिए रामविलास शर्मा ने हिंदी नवजागरण की अवधारणा को मुख्यतः और मूलतः साम्राज्यवाद विरोधी माना है।

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा

स्वाधीनता संग्राम में परोक्ष और अपरोक्ष रूप से हिंदी सिनेमा का योगदान महत्त्वपूर्ण है। हिंदी भाषा की अखिल भारतीय स्वीकार्यता दिलाने में भी तद्युगीन हिंदी सिनेमा की भूमिका अद्वितीय है।

भारत में 5 मार्च, 1918 ई. को अंग्रेजों द्वारा सिनेमैरोग्राफ एक्ट लागू किया गया। जिसका उद्देश्य सांस्कृतिक नहीं बल्कि राजनैतिक था। जहां भी अंग्रेजों को यह लगता था कि किसी फिल्म विशेष से स्वतंत्रता का संदेश फैलाने की कोशिश हो रही है, वहीं वह दृश्य सेंसर की कैंची का शिकार हो जाता। समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया ने फिल्मों के बारे में सटीक टिप्पणी की थी कि 'भारत को एक करने वाली दो ही शक्तियां हैं, पहला गांधी दूसरी फिल्में।'[5]

मूक सिनेमा के दौर में भी औपनिवेशिक चेतना के विरुद्ध सामाजिक चेतना की फिल्में बनना शुरू हो गई थीं। पाटनकर बंधुओं द्वारा निर्मित फिल्में, 'शिक्षा तथा वासना' और 'कबीर–कमाल' उल्लेखनीय है।'[6]

बीसवीं सदी के तीसरे दशक में बोलती फिल्मों ने राष्ट्रीय आंदोलन के कारण उपजी सामाजिक गतिविधियों को फिल्म के प्लॉट के रूप में अपनाया। नितिन बोस, चंदूलाल साह, महबूब खान, वी.एन. रेड्डी, सोहराब मोदी, मास्टर विनायक, विमल रॉय, के.ए. अब्बास और चेतन आनंद की फिल्मों ने स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि में आजादी पाने की चेतना तथा हिंदी भाषा का प्रसार किया गया है। 1934 ई. में एम. भवनानी ने प्रेमचंद की एक कहानी पर 'द मिल' या 'मजदूर' (उस दौर में फिल्मों के दो नाम : एक अंग्रेजी और एक हिंदी होते थे) नाम की फिल्म बनाई। यह फिल्म मिल मजदूर और मिल मालिक के संबंधों का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में खुलासा करती है। वी. शांताराम ने तद्युगीन सामाजिक और राजनैतिक प्रश्नों पर फिल्में बनाई। 1937 ई. में बनी उनकी फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या को उठाती है। 1939 ई. उन्होंने 'आदमी' फिल्म बनाई, जिसमें पहली बार वेश्या की स्थितियों को चित्रित किया गया तथा वेश्या पुनर्वास को गंभीरता से हल करने की सिनेमाई कोशिश की गई। 1941 ई. में वी. शांताराम की 'पड़ोसी' फिल्म हिंदू–मुस्लिम एकता और सांप्रदायिक सौहार्द के प्रश्नों को गंभीरता से उठाती है। उनकी सर्वाधिक उल्लेखनीय फिल्म 'डॉ. कोटनीस की अमर कहानी' (1946) है। इसे द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर बनाया गया था।

चौथे दशक में सोहराब मोदी ने भारतीय ऐतिहासिक चरित्रों को लेकर 'जहांगीर' और पोरस के जीवन की घटनाओं पर क्रमशः 'पुकार' (1939) और 'सिकंदर' (1941 ई.) फिल्में बनाई। इन फिल्मों की सफलता यही थी कि इसने जनता के बीच राष्ट्रवादी भावनाओं को मुखर किया। चौथे दशक में ही 'इप्टा' (1936 ई.) के गठन ने हिंदी फिल्मों को वामपंथी सोच से लैस किया। 1943 ई. में ज्ञान मुखर्जी की 'किस्मत' फिल्म का गाना 'दूर हटो ए दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है ...' एक राष्ट्रीय चेतना का गीत बना। 1945 ई. में विमल राय ने अपनी फिल्म 'हमराही' में रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'जन–गण–मन' कविता का इस्तेमाल किया जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत का राष्ट्रगान बना।

भाषाई रूप से भारत एक समृद्ध राष्ट्र है। यहां की भाषाएं अलग–अलग सामाजिक अस्मिताओं के प्रस्तुतिकरण का माध्यम होने के साथ–साथ सांस्कृतिक रूप से एक–दूसरे की ताकत है। भाषाओं के इस विविधतापूर्ण परिवेश में हिंदी का एक विशिष्ट स्थान है। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी की भूमिका न सिर्फ महत्त्वपूर्ण थी बल्कि निर्णायक भी रही।

संदर्भ सूची

1 हिंदी भाषा और साहित्य, डॉ. रामप्रकाश, पृ. 46
2 इंडियन ओपीनियन, फिनिक्स, 1906
3 गांधी हिंद दर्शन – काका कालेलकर, पृ. 300
4 यंग इंडिया – 1.9.1921
5 लोहिया : एक जीवनी, सं. ओंकार शरद, पृ. 12
6 भारतीय चलचित्र, महेंद्र मित्तल, पृ. 342

2014, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)